"गुरु पूर्णिमा पर विशेष"

सकल कामनाओं की पूर्ति का मार्ग

"गुरु कृपा"

गुरु ही सिद्धि, गुरु ही पूर्णता

गुरु ही जीवन के परम आधार हैं। गुरु ही सांसारिक कामनाओं की पूर्ति तक पहुंचने का निर्बाध मार्ग है...

गुरु भक्ति, गुरु निष्ठा और गुरु कृपा के माध्यम से साधक बाहरी उपलब्धियों के साथ ही साथ आंतरिक पूर्णता, शांति और आत्मिक संतोष को प्राप्त करता है...

अथ संसारीणः सर्वे गुरुगीताजपेन तु।
सर्वान् कामांस्तु भुञ्जन्ति त्रिसत्यं मम भाषितम्।।

संसार में रहने वाले लोग यदि बार-बार गुरु गीता का जप करें, तो वे अपनी सभी इच्छाओं को प्राप्त कर लेते हैं। हे पार्वती, जो मैं कह रहा हूं, वह पूर्णतः सत्य है तीन बार सत्य है।

संसार में रहने वाले लोगों के लिए सबसे अधिक आवश्यक क्या है? यदि हम ईमानदारी से अपने भीतर झांकें, तो पाएंगे कि हमारी सबसे बड़ी चिंता, सबसे बड़ा प्रयास, और सबसे अधिक ऊर्जा सब कुछ हमारी कामनाओं की पूर्ति के इर्द-गिर्द ही घूमता है। हम जो भी करते हैं, जिस दिशा में भी चलते हैं, उसके पीछे कोई न कोई कामना अवश्य होती है।

इसी सत्य को श्री गुरु गीता एक अत्यंत सरल, किन्तु गहन वचन में प्रकट करती है कि **गुरुगीता का जप मात्र ही मनुष्य की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने में समर्थ है। यह कोई साधारण आश्वासन नहीं है, यह एक दिव्य वचन है, एक आध्यात्मिक प्रतिज्ञा है।**

अब प्रश्न उठता है - कामनाओं की पूर्ति पर इतना अधिक जोर क्यों?

इसका कारण बहुत सूक्ष्म है। जब कोई वस्तु हमारे जीवन में अधूरी रह जाती है, तभी वह सबसे अधिक मूल्यवान बन जाती है। जो हमारे पास नहीं है, वही हमें सबसे अधिक आकर्षित करता है। यही कारण है कि अधूरी कामनाएं हमारे हृदय में एक पीड़ा बनकर बैठ जाती हैं। बार-बार याद दिलाती हैं, **'काश ऐसा हो जाता', यह 'काश' ही मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा बोझ है।**

भौतिक जगत में किसी को स्वास्थ्य चाहिए, किसी को धन। जिसके पास स्वास्थ्य नहीं, वह कहता है 'बस स्वास्थ्य मिल जाए, फिर सब ठीक हो जाएगा।' जिसके पास धन नहीं, वह कहता है 'बस धन आ जाए, फिर जीवन संवर जाएगा।' और जिसके पास दोनों हैं, वह कुछ नया सुख, कुछ नई उत्तेजना खोजने लगता है। लेकिन कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। जिसके पास सब कुछ है, वह भी कई बार भीतर से खाली हो जाता है और यही शून्यता उसे अवसाद, डिप्रेशन की ओर ले जाती है।

तो स्पष्ट है **कामनाएं पूरी होना ही समाधान नहीं है। समस्या का मूल कुछ और है।**

यहीं पर गुरु गीता का वास्तविक चमत्कार आरम्भ होता है। **गुरु गीता अर्थात् गुरु ध्यान केवल कामनाओं को पूर्ण**

करने का साधन नहीं है, बल्कि यह धीरे-धीरे साधक को उस स्थिति में ले जाती है जहां कामनाएं ही रूपांतरित होने लगती हैं। पहले मन कहता है 'मुझे यह चाहिए'। फिर गुरु कृपा से वही मन कहता है 'जो उचित है, वही मिले' और अंत में स्थिति यह हो जाती है 'मुझे कुछ नहीं चाहिए, क्योंकि जो है वही पूर्ण है।' यह परिवर्तन ही सच्ची सिद्धि है।

इसलिए जब कहा जाता है कि गुरु गीता का पाठ कामनाओं को पूर्ण करता है, तो उसका अर्थ केवल बाहरी उपलब्धियां नहीं है। वह आपको उस अवस्था तक ले जाता है जहां कामना और पूर्णता एक हो जाते हैं **जहां न 'काश' बचता है, न 'अधूरापन' केवल एक शांत, संतुष्ट और पूर्ण अस्तित्व शेष रह जाता है।**

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं धर्मसारं मयोदितम्।
गुरुगीतासमं स्तोत्रं नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।।

संसारिक मन की पहली प्रतिक्रिया क्या होती है? जैसे ही उसे सुनने को मिलता है कि कोई ऐसा स्तोत्र है जिसके पाठ मात्र से सारी कामनाएं पूर्ण हो सकती हैं, तो वह तुरन्त संदेह करता है **'नहीं, यह संभव नहीं है यह कोई मायाजाल है'**।

क्यों? क्योंकि मन को असाधारण बातों पर विश्वास करने की आदत नहीं है। वह उसी को सत्य मानता है जो उसने बार-बार अनुभव किया है। परिश्रम करो, संघर्ष करो, तब कहीं जाकर थोड़ी-सी प्राप्ति होती है। यदि कोई कहे कि केवल जप, गुरु ध्यान से सब कुछ मिल सकता है, तो मन उसे स्वीकार नहीं करता।

यही वह स्थान है जहां भगवान शिव स्वयं हस्तक्षेप करते हैं। शिव जानते हैं कि आने वाले समय में हर साधक का मन यही प्रश्न करेगा, यही संदेह करेगा। इसलिए वे एक बार नहीं, दो बार नहीं, बल्कि तीन बार दोहराते हैं **'सत्यं सत्यं पुनः सत्यं' हे पार्वती!, मैं जो कह रहा हूं वह सत्य है, पुनः सत्य है, और पुनः भी सत्य है। यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि धर्म का सार है।**

शिव का बार-बार कहना केवल कथन नहीं है यह साधक के भीतर छिपे संदेह को तोड़ने का प्रयत्न है।

शिव का आशय यह नहीं है कि बिना समझ के, बिना भाव के, केवल शब्दों के उच्चारण से चमत्कार हो जाएगा। वे यह कह रहे हैं कि **यदि तुम निष्ठा, श्रद्धा और समर्पण के साथ गुरु गीता का पाठ करोगी, तो तुम्हारी सभी कामनाएं पूर्णता को प्राप्त करेंगी। और यहां 'पूर्णता' का अर्थ केवल बाहरी प्राप्ति नहीं है। कभी-कभी कामना पूरी होकर मिलती है और कभी-कभी वह भीतर से शांत होकर समाप्त हो जाती है। दोनों ही स्थितियां पूर्णता हैं।**

जब शिव तीन बार कहते हैं **'यह सत्य है'** तो वे साधक को एक ऐसे मार्ग पर स्थापित कर रहे हैं जहां विश्वास ही साधना बन जाता है और साधना ही सिद्धि।

गुरुर्देवो गुरुर्धर्मो गुरौ निष्ठा परं तपः।
गुरोः परतरं नास्ति त्रिवारं कथयामि ते।।

गुरु ही देव हैं, गुरु ही धर्म हैं, और गुरु के प्रति निष्ठा ही

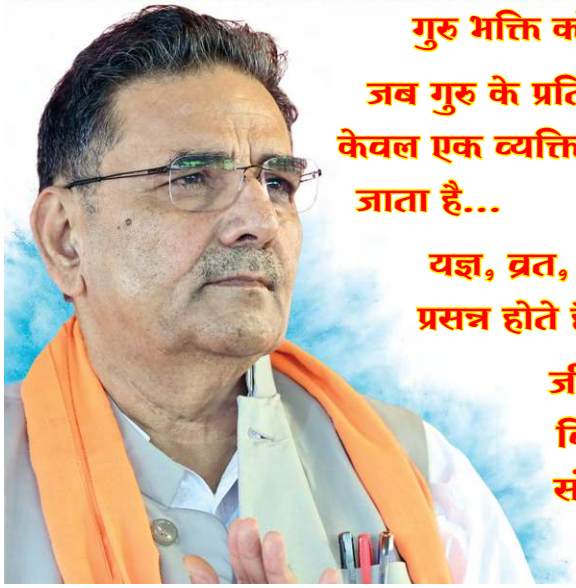

गुरु भक्ति कोई सामान्य उपलब्धि नहीं है...

जब गुरु के प्रति श्रद्धा, निष्ठा और समर्पण जागृत होता है, तब केवल एक व्यक्ति का नहीं बल्कि पूरे कुल का कल्याण प्रारम्भ हो जाता है...

यज्ञ, व्रत, तप और पुण्य कर्म तब पूर्ण फल देते हैं जब गुरु प्रसन्न होते हैं...

जीवन में सद्गुरु का मिलना और सद्गुरु में विश्वास जागना स्वयं ईश्वर के अनुग्रह का संकेत है..।

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

परम तप है। गुरु से बढ़कर कुछ भी नहीं है। हे पार्वती, मैं यह बात तुम्हें बार-बार कह रहा हूं।

यह केवल एक श्लोक नहीं है, यह संपूर्ण आध्यात्मिक जीवन का सार है। जब शिव स्वयं यह कहते हैं कि **गुरोः परतरं नास्तिगुरु...** से बढ़कर कुछ भी नहीं है, तो इसका अर्थ है कि साधना, धर्म, तप, ज्ञान सबका केंद्र गुरु ही हैं।

गुरु कब आते है?

अब प्रश्न उठता है, गुरु का हमारे जीवन में आगमन कब होता है? गुरु तब आते हैं जब जीवन बदलने के लिए तैयार हो चुका होता है। जब पूर्व जन्मों और इस जन्म के सत्कर्मों का संचय उस बिंदु पर पहुंच जाता है जहां उसका फल मिलने का समय आ जाता है। तभी गुरु का प्राकट्य होता है। इसलिए कहा जाता है कि **जीवन दो भागों में बंटा होता है गुरु मिलने से पहले और गुरु मिलने के बाद। गुरु से पहले का जीवन खोज है, भटकाव है। गुरु के बाद का जीवन दिशा है, स्पष्टता है और क्रमशः शांति की ओर बढ़ना है।**

आज के समय में इस सत्य को स्वीकार करना कठिन हो गया है। ज्ञान का भ्रम इतना गहरा हो गया है कि सीखने की विनम्रता खोती जा रही है। परन्तु **जीवन का एक नियम है जिस वस्तु का अभाव होता है, उसी की अनुभूति सबसे तीव्र होती है।** जिस दिन थोड़ा भी सिर दुखता है, उस दिन समझ आता है कि जब सिर नहीं दुखता था, तब काम करना कितना सहज था। वैसे ही, मन में थोड़ी सी पीड़ा हमें यह सिखा देती है कि दूसरों के मन को कष्ट नहीं देना चाहिए। यही पीड़ा, यही अभाव मनुष्य को गुरु की ओर ले जाता है।

जब हम कहते हैं **'गुरुर्देवो'** तो इसका अर्थ है कि गुरु ही वह माध्यम हैं जिनके द्वारा हम देवत्व का अनुभव करते हैं। **'गुरुर्धर्मः'** का अर्थ है कि सही और गलत का बोध, जीवन का मार्ग, कर्तव्य का ज्ञान सब गुरु से ही प्रकट होता है। और **'गुरौर्निष्ठा परं तपः'** का अर्थ है कि गुरु के प्रति अटूट विश्वास और निरंतर समर्पण यही सबसे बड़ा तप है। यह तप किसी जंगल में जाकर साधना करने से भी बड़ा है।

इसलिए शिव बार-बार कहते हैं **'त्रिवारं कथयामि ते'** क्योंकि यह सत्य इतना गहरा है कि एक बार सुनने से मन उसे स्वीकार नहीं करता। जब यह बात हृदय में स्थापित हो जाती है, तब साधना सरल हो जाती है, जीवन सहज हो जाता है और जो पीड़ा हमें भटका रही थी, वही पीड़ा हमें गुरु के चरणों तक पहुंचा देती है।

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता।।

धन्य है वह माता-पिता, धन्य है वह कुल और वंश; और धन्य है यह पृथ्वी भी, जहां गुरु भक्ति होती है।

एक बहुत सीधी और गहरी बात क्या हर किसी के लिए संभव है गुरु की भक्ति करना? नहीं, हर व्यक्ति गुरु की भक्ति नहीं कर सकता। क्योंकि **गुरु भक्ति कोई साधारण भावना नहीं है, यह अनुकंपा का परिणाम है। वह स्थिति जहां केवल प्रयास पर्याप्त नहीं होता, वहां ईश्वर की कृपा भी आवश्यक होती है।**

जहां गुरु भक्त जन्म लेते हैं, वह कोई संयोग नहीं होता वह अनेक जन्मों के सत्कर्मों का संचित फल होता है। **'जौं प्रभु अनुग्रह कीन्हा...'**, यदि प्रभु की कृपा हो जाए, तभी पार उतारना संभव होता है।

गुरु अनुग्रह : अमृत आगमन

'अनुग्रह' शब्द अपने आप में बहुत गहरा है। अनुग्रह का एक अर्थ है कृपा, लेकिन एक सूक्ष्म अर्थ यह भी है 'ग्रहों को अपने अनुसार कर लेना...'। हम सभी अपने जीवन में ग्रहों के प्रभाव से प्रभावित होते हैं। कभी समय साथ देता है, कभी विरोध करता है। परंतु जब अनुग्रह होता है, तो वही ग्रह जो पहले बाधा बन रहे थे, अब सहायक बन जाते हैं। जीवन का प्रवाह बदलने लगता है।

गुरु से भेंट होना, गुरु के मार्ग का अनुसरण करना, गुरु के प्रति निष्ठा जागृत होना, गुरु से दीक्षा प्राप्त होना यह सब ऐसे ही नहीं होता। यह सब भाग्य में अंकित होता है और

यह भाग्य उसी का बनता है जिसने अपने पूर्व कर्मों से उसे अर्जित किया हो।

इसलिए शिव कहते हैं **धन्य है वह परिवार, धन्य है वह घर, जहां गुरु भक्ति का उदय होता है। क्योंकि वहां केवल एक व्यक्ति का उत्थान नहीं होता, वहां पूरे वंश का कल्याण प्रारम्भ हो जाता है। जहां गुरु के प्रति निष्ठा होती है, वहां जीवन केवल भोग का माध्यम नहीं रहता, वह उत्थान का मार्ग बन जाता है।**

गुरु आशीर्वाद : प्रसन्नोभवः

आकल्पजन्मकोटीनां यज्ञव्रत तपः क्रियाः।
ताः सर्वाः सफलाः देवि गुरुसन्तोषमात्रतः।।

असंख्य जन्मों तक किए गए यज्ञ, व्रत और तप ये सब तभी फलित होते हैं, जब गुरु प्रसन्न होते हैं। केवल गुरु की प्रसन्नता से ही सब कुछ सफल हो जाता है।

हम जीवन भर कर्म करते हैं यज्ञ करते हैं, व्रत रखते हैं, तप करते हैं, दान देते हैं। परन्तु इन सबका फल कब मिलता है? शिव स्पष्ट कहते हैं जब तक गुरु संतुष्ट नहीं होते, तब तक इन साधनों की पूर्णता नहीं होती।

इसका अर्थ यह नहीं है कि यज्ञ, व्रत और तप व्यर्थ हैं। ये सब आवश्यक हैं। लेकिन ये सब भूमि को तैयार करने की प्रक्रिया हैं और जब भूमि तैयार हो जाती है, तब उस पर कृपा का बीज गिरता है जिसे हम कहते हैं गुरु का आगमन।

गुरु की कृपा कोई आकस्मिक घटना नहीं है। यह असंख्य जन्मों के संचित पुण्यों का परिणाम है। जब साधक भीतर से तैयार हो जाता है, तब गुरु के दर्शन होते है और यह दर्शन केवल किसी व्यक्ति से मिलना नहीं है, यह एक दिशा से मिलना है, एक प्रकाश से जुड़ना है।

गुरु केवल ज्ञान नहीं देते, वे जीवन को दिशा देते हैं। गुरु केवल मार्ग नहीं दिखाते, वे उस मार्ग पर चलने की शक्ति भी देते हैं और सबसे बड़ी बात, गुरु केवल कर्मों का फल नहीं दिलाते, वे कर्मों के बंधन से मुक्त होने का मार्ग भी बताते हैं।

इसलिए कहा गया **'गुरुसन्तोषमात्रतः...'**, जब गुरु प्रसन्न होते हैं, तो वर्षों का प्रयास क्षण में फलित हो जाता है। और गुरु को प्रसन्न करना कठिन नहीं है। वह केवल बाहरी सेवा से नहीं, बल्कि भीतरी निष्ठा, श्रद्धा, और समर्पण से होता है। जब यह समर्पण जागृत हो जाता है, तब असंख्य जन्मों का संचित तप एक साथ फल देने लगता है।

शरीरमिन्द्रियं प्राणाश्चार्थः स्वजनबन्धुता।
मातृकुलं पितृकुलं गुरुरेव न संशयः।।

शरीर, इन्द्रियां, प्राण, धन, अपने लोग यहां तक कि माता-पिता का कुल भी सब कुछ गुरु में ही स्थित है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

जय-जय-जय महादेव
जय-जय-जय गुरुदेव

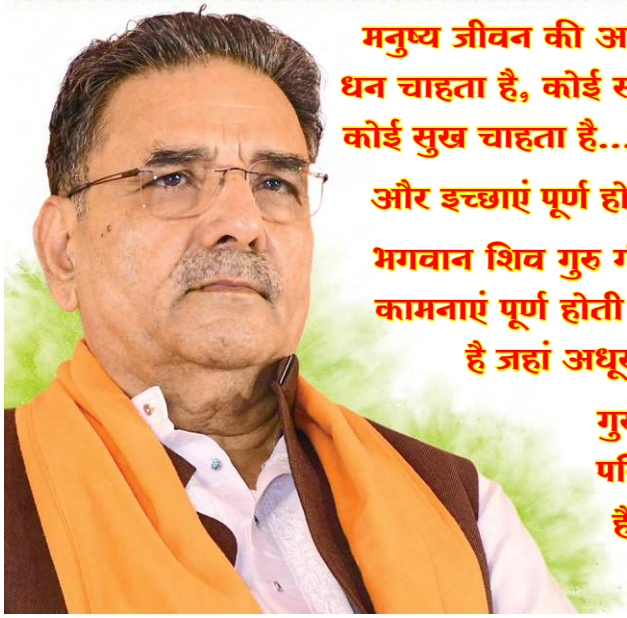

मनुष्य जीवन की अधिकांश दौड़ इच्छाओं की पूर्ति के लिए है कोई धन चाहता है, कोई स्वास्थ्य चाहता है, कोई सम्मान चाहता है और कोई सुख चाहता है...

और इच्छाएं पूर्ण होती है गुरु कृपा से...

भगवान शिव गुरु गीता में स्पष्ट कहते है कि गुरु कृपा से न केवल कामनाएं पूर्ण होती हैं, बल्कि साधक उस अवस्था को प्राप्त करता है जहां अधूरापन समाप्त हो जाता है।

गुरु केवल इच्छित वस्तु नहीं देते, वे इच्छाओं को परिष्कृत कर जीवन को पूर्णता की ओर ले जाते हैं। यही गुरु कृपा का गूढ़ रहस्य है...

– सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली